ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

अंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता ™

संपादक मंडल

मुख्य संपादक

प्रा.बहिरम देवेंद्र (हिंदी) डॉ. योगिता रांधवणे (मराठी)

सहायक संपादक

प्रा.नारायण हिरडे डॉ. राजेंद्र ठाकरे

डॉ. नीतिन थोरात प्रा. बापु देवकर

Reg.No U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At Post Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell 07588057695 09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vaidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR * Dist.Nanded *

60	कबीर और संत तुकाराम के नारी संबधी विचार डॉ. भास्कर उमराव भवर	318
61	राष्ट्रीय संत तुकडोजी महान समाजसुधारक प्रा. हिरडे नारायण एन.	322
62	समन्वयवादी संत रविदास डॉ. सुग्रीव नामदेव जाधव	326
63	संत कबीर एवं संत तुकाराम के विचारों की प्रासंगिकता डॉ. नानासाहेब जावळे	328
64	'संत कबीरदास' का सामाजिक प्रदेय-- प्रा. शिंदे नवनाथ सर्जेराव,	331
65	संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता डॉ.गोरखनाथ किर्दत	335
66	समाज के नवनिर्माण में संत साहित्य का योगदान डॉ.नवनाथ गाड़ेकर	338
67	हिंदी संत साहित्य में भक्ति का स्वरुप प्रा. नयन भादुले -राजमाने	341
68	संत कबीर के विचारों की प्रासंगिकता प्रा. प्रदिप बबनराव पंडित	344
69	संत साहित्य में सामाजिक चेतना राजेश सिंह	347
70	संत–साहित्य की प्रासंगिकता डॉ राकेश कुमार सिंह	351
71	हिंदी संत साहित्य की उपादेयता रवि कुमार,	356
72	समकालीन हिंदी कविता: स्वरूप एवं संकल्पना प्रा.रेश्मा चंद्रभान सोनवणे	365
73	संत साहित्य की प्रासंगिकता का प्रश्न ऋषिकेश कुमार	370
74	मध्ययुगीन संत साहित्य की प्रासंगिकता शेख रुबीना	373
75	संत साहित्य की प्रासंगिकता (संत कबीर के संदर्भ में) सचिन मदन जाधव	378
76	संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता. प्रा. डॉ. संतोष येरावार	381
77	"भारतीय संतो का साहित्यिक योगदान" सरपे सुप्रिया गारत	384
78	'मराठी संत ज्ञानेश्वर और नामदेव की सामाजिक भूमिका' डॉ.शेख शहेनाज अहेमद	388
79	कबीर की प्रासंगिकता प्रा. शितोळे नामदेव ज्ञानदेव	391

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR * Dist.Nanded *

MAH MUL/03051/2012 UGC Approved Sr.No. 62759 Vidywarta® | February 2018 Special Issue | 0383
ISSN: 2319 9318

77

संत कबीर के साहित्य की प्रासंगिकता.

प्रा. डॉ. संतोष येरावार
देगलूर महाविद्यालय देगलूर

वैश्वीकरण एवं बाजारवाद के कारण संचार माध्यमों की प्रचुरता, यांत्रीकरण, मुक्तव्यापार, नीजिकरण, आधुनिकीकरण, ओर भौतिक सुख साधनों की सहज उपलब्धता नें मानव जीवन को सरल बना दिया उसके आय में वृद्धी हो गई तो दुसरी ओर समाज अनेक समस्यावोंसे ग्रस्त हो गया | मानवीय, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मुल्य तहस-नहस हो गए | सारे उदात्त, व्यापक एवं हितकारक मुल्य ढए गए | प्रेम, सत्य, अहिंसा, समर्पण और सेवाभाव की जगह स्वार्थ, वासना, क्रुरता और पशूता ने ले ली | बाजारवाद की मानसिकता ने अर्थाधंदा को वढावा दिया | भौतिक साधनों की अती लालसा ने मनुष्य को भ्रष्ट, गुन्हेगार और स्वार्थी बना दिया है | मानव के हर कार्य और विचार अर्थाजन तक सिमित रह गए | लुट-खसोट, धोखा- धडी, हत्या, बालगुन्हेगारी, बलात्कार, वासनांधता को अपनानें को मानव विविश हो गया | बाजारीकरण से उपजी उपभोगी मानसिकताने मानव को अय्याश बना दिया | मनुष्य बाह्य भौतिक सुख को हि आनंद मात्र समझने लगा जिस कारण प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, दिखावा, आडंबर, और अर्थप्राप्ती की विकृत दौड प्रारंभ हो गई | प्रेम की जगह वासना नें ले ली जिसकारण विवाहबाह्य सबंध, मुक्त यौनाचार, कुँवारी मातायें, गर्भपात, लिव्ह इन रिलेशनशिप, विवाह पुर्व संबध, एवं घटस्फोट जैसी समस्वाओं ने अपने पैर जमाने प्रारंभ किए | राजनीति के विकृत, सत्तामोहि एवं विशाक्त मानसिकताने |

समाज, धर्म, संस्कृती, शिक्षा एवं अर्थ को भी प्रभावित कर उसे भी विकृत एवं विशाक्त बना दिया है | राजनिती में सत्ता पाने कि लालसाने नेताओं के चरित्र को बौना बना दिया | आतंकवाद, सांप्रदायिकता, धर्मांधता, प्रांतवाद, भाषावाद, लुट खसोट, एवं भ्रष्टाचार को वढावा दिया | जिसकारण संत साहित्य में व्यक्त विचार वर्तमान समाज में मानवता को प्रज्वलित करने में तथा बंधुता, प्रेम, सेवा, समर्पन की स्थापना करने में सक्षम है | संत साहित्य में मानव को मानव बनाने की क्षमता और जीवन उपयोगी मुल्यों को पुनः रोपित करने की क्षमता है |

संत कबीर एक समाज सुधारक और मानवधर्म के प्रवर्तक थे इसीकारण अपने वाणी के माध्यम से उन्होंने समाज को विविध कुरितियों, विकृतियों, विडंबनाओं एवं विषमताओं से अवगत किया | आंडबरो, मिथ्याचारों, कुप्रथाओंसे, एवं विशाक्त मानसिकतासे लोगों को सचेत किया और उन्हे सहि दिशा दी इसलिए आज भी कबीर का साहित्य प्रासंगिक है | ''हिन्दी साहित्य में कबीर का महत्व आज भी उतना ही है जितना भक्तिकाल में था | बल्कि कहना तो यह होगा कि उस काल से भी अधिक महत्व आज है | आज भी हमारी सामाजिक स्थितियाँ उन्ही विचित्रताओं और विशमताओं से घिरी हुई है जैसे पहले थी | भक्तिकाल में मनुष्य के पास भक्ति का आश्रय था, ईश्वर के प्रति आस्था थी | जिसमें वह अपने व्दन्द, तनाव और संत्रास को उसके विश्वास का भागी बनाकर कम कर देता था | आज वह अधिक तनावग्रस्त, अशांत और संकुचित दायरे में सिमटा हुआ है |''

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

धर्म के नाम पर वर्तमान परिवेशमें भी अवाम को भ्रमित किया जा रहा है | धर्म के वास्तविक रुप को उघाडने का कर्य कबीरदस नें किया है | अपने स्वार्थ की पुर्तता के लिए धर्म के ठेकेदार आडंबर, मूर्तिपूजा, कर्मकांड, रोजा, नमाज, यज्ञ आदि को बढावा दिया जा रहा है ओर लोगों को लुटा जा रहा है |

धार्मिक प्रथाओंके एवं पतित, जिर्ण-पुरातन परंपरां के नामपर अशांतता, जातियता एवं धर्मांधता को बढावा दिया जा रहा है | संत कबीर येसी भ्रमित, अविवेकी प्रथाओं पर प्रहार करते है |

''मूँड मुडाए हरि मिले, तो हर कोई लेई मुंडाया,
बार बार के मुंडते, भेड ना वैकुंठ जाय |''
''कांकर पात्थर जोरि के मस्जिद लयि बनाये
ता चढ मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय |''

कबीर कहते है यदि मुंडन करने से ईश्वर की प्राप्ती होती तो बार-बार भेडो को मुंडाया जाता है तो क्या वह वैकुंठ जाती है | धर्म के तथाकथित ठेकेदार धर्म के नाम पर अपने स्वार्थ की रोटी सेंखते है | मुंडन, पुजा-अर्चा, अभिषेक, यज्ञ, चादर चँढाना आदि बाह्य आडम्बरों को एवं निरर्थक कर्मकांड को बढावा देते है और लोगो को ठगते है | कर्मकांड से आरोग्य, धन, वैभव, एवं यश की प्राप्ती होती तो सदैव पुजा-अर्चा करनेवाले, नमाज पढवानेवाले दुनियाँ के सबसे सफल व्यक्ती होते? कर्मकांड के कारण मनुष्य अकर्मण्य हो रहा है | ऐसे अकर्मण्य एवं निराश व्यक्ती को कर्मशील बनाने के लिए उसे विवेकशील बनाने के लिए कबीर का साहित्य महत्त्वपूर्ण है |

धर्म के नाम पर आतंकवाद को, हिंसा को, धर्मांधता को बढावा दिया जा रहा है | भोले-भाले युवकों को भ्रमित किया जा रहा है | वास्तव में कोई भी धर्म हिंसा, बुराई और हैवानियत नही सिखाता है | परंतु कुछ धर्मांध ठेकेदार धर्म के नामपर हिंसा फैला रहे है | आय.एस.आय.एस., अलकायदा, बोको हराम, तालिबान, हिजबुल मुजाहिद्दीन, अल बदर आदि आतंकवादी संघटन धर्म के नाम पर, जिहाद के नाम पर एवं जन्नत के नाम पर युवकों को आतंकवादी बना रहे है | हजारों बेकसूर लोगों को मारा जा रहा है | आवाम को डराया और धमकाया जा रहा है | जिहादी बनने वाले युवक लोगों को मार कर जन्नत जाने की कामना कर रहे है | अफगानिस्तान, पाकिस्तान, शिरिया, लिबीया, इराण, इराक, सोमालिया एवं ट्युनेशिया आदि राष्ट्र आतंकवाद के नाम पर जल रहे है | धर्म के नाम पर सांप्रदायिकता को बढावा दिया जा रहा है | कट्टरता, क्रुरता, अमानवियता फैलाने में धर्मांध ठेकेदार सफल भी हो रहे है | दुनिया भर के मुस्लीम युवक आय.एस.आय.एस. आतंकवादी संघटन में शामील होने के लिए शिरिया जा रहे है | यह धर्मांध लोगो की सफलता का प्रमाण है | भारत में भी पाकिस्तान आतंकवाद को धर्म के नाम पर बढावा दे रहा है | कश्मीर के युवकों को पत्थरबाजी करने के लिए भी धर्म को सहारा लिया जा रहा है | जिहादीयों कहाँ जा रहा है धर्म के लिए लोगों को मारने से जन्नत की प्राप्ती होती है | ऐसे भ्रमित भटके हुवे युवाओं के लिए कबीर के वास्तववादी एवं मानवतावादी विचार निल का पत्थर साबित हो सकते है | कबीर के विचार आज भी प्रासंगिक बन पडत है | कबीर ने धर्म का और मानवता का जो यथार्थ रूप अभिव्यक्त किया है वह धर्मांध युवाओं के लिए आवश्यक है |

''मौको कहाँ ढूँढे रे, बंदे मै तो तेरे पास में,
ना में देवल, ना में मस्जिद, ना काबे कैलास में |''
''ना तो कौनो किया, कर्म में, नहीं योग बैराग में,
खोजी होय तो तरतं मिलिहो, पलभर की तलाश में |''

धर्म, संप्रदाय, जाति मनुष्य को जन्म से नही प्राप्त होते और नही उसके प्राप्ति में मनुष्य का कोई योगदान होता है | जन्म के बाद मनुष्य को जाति एवं धर्म के नामपर बाटा जाता है | मुल रूप में सभी मानव मात्र है |

''जेटू बामन बामनि का जाया आन बाट है व क्यों नही आया

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

जे तू तुरक तुर्कान जाया तो भीतरि खतना क्यों न कराया ||''

कबीर के समय में भी धर्म, एवं संप्रदायो के नाम पर दंगे फसाद हिंसा ओर अमानवीय कृतियाँ होती रहती थी | धर्म की श्रेष्ठता ने मनुष्य को हिंसक बना दिया था | इसलिए कबीर कहते है कि ना इश्वर मंदिर में रहता है ओर ना ही मस्जिद में ओर ना मै कैलास में ईश्वर तो जीवमात्र में हि वसा हुआ है | मानव के भीतर के ईश्वर को पँहचानो मानव के साथ मानवता पुर्ण व्यवहार करों ईश्वर की प्राप्ती हो जायेगी | अल्लाह या ईश्वर के नाम पर हिंसा या आतंक धर्म नहो हैं | वे आगे कहते है ईश्वर तो घट-घट में व्याप्त है |

''कस्तुरी कुंडली बसे मृग ढुँडे बन माही,

ऐसे घट-घट राम है दुनिया देखी नाही |''

संत कबीर के युग में विभिन्न संप्रदायों के आपसी मतभेंदो से भी अधिक बडभ समस्या हिन्दू और मुसलमान के आपसी मतभेंदो की थी | उस समय इन दोनों के संबंध बहुत अर्थो मे आज जैसे थे | लेकिन दोनों के संबंधो में एक बहुत बडा फर्क भी था, उस युग में मुसलमान शासक थे, आज वे शासक नहीं हैं | लेकिन इस फर्क के बावजूद दोनों के संबंध पहले की तरह आज भी मतभेद और तनाव के हैं | संत कबीर दोनों के विषय में जो बात कहते हैं, वह उनके युग की तरह आज भी सच है -

''हिन्दू कहै मोहि राम पियारा, तुर्क कहै रहिमाना |

आपस में दोउ लरि-लरि मुए, मर्म न काहु जाना ||''

राम और रहीम का यह झगडा दोनों संप्रदायों को आज तक एक-दुसरे से अलग-अलग करता रहा है | दोनों भी यह समझने के लिए तैयार नही हैं कि, राम और रहिम एक ही ईश्वर के अलग-अलग नाम हैं |

आज धर्म, ईश्वर, अल्लाह एवं धर्मग्रंथ के नाम पर हिंसा को बढावा दिया जा रहा है | धार्मिक स्थलों के कारण विषमता फैलायी जा रहि है | भोली-भाली अवाम को गुमराह किया जा रहा है | आये दिन दंगल हो रही हे | ऐसे विषम परिस्थिती में लोगों को वास्तविक ईश्वर का और वास्तविक धर्म का परिचय होना आवश्यक है | कबीर नें धर्म की वास्तविकता को उघाडकर लोगों की आँखे खोलने का प्रयास किया है | कबीर के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है |

प्रेम के उदात्त, व्यापक एवं वास्तविक रूप को कबीर ने अभिव्यक्त किया है | वर्तमान में प्रेम के नामपर प्रपंच किया जा रहा है | प्रेम में प्रेम को छोडकर सबकुछ किया जा रहा है | प्रेम मे जँहा समर्पण, स्नेह, वात्सल्य, दया को प्रधानता दि जाती थी आज प्रेम के नाम पर वासना एवं षडयंत्र को महत्व दिया जा रहा है | प्रेम में पाने का भाव महत्वपूर्ण हो गया है | प्रेम शरीर सुख का पर्याय बन गया है | प्रेम के नाम पर हत्या, धोखा, ॲसिड फेकना जैसी घटनायें आम हो गई है | प्रेम भी जाँती, वर्ग, वर्ण, संप्रदायस एवं धर्म में बट रहा है | जातिविषयक प्रतिष्ठा के कारण प्रेम को कलंकित किया जा रहा है | आज युवकों को प्रेम के वास्तविक एवं उदात्त रूप को समझना आवश्यक है | कबीर के विचारों में वह सामर्थ्य है जो समाज को सहि राह दिखा सकते है | कबीर के प्रेम संबंधी विचार आज भी प्रासंगिक है |

''यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नहिं |

शीष उतारे भुयं धरे, तब पैठ घर माँहि |''

प्रेम हि मानव जीवन का सार है | प्रेम के बिना संसार अधुरा है | प्रेम किसी वर्ग विशेष की जागिर नहि है | प्रेम किसी विशेष जाति, धर्म, वर्ण, संप्रदाय के बन्धन में नहीं है ओर न ही इसे किसी हाट-बाट, शहर-बाजार से खरीदा जा सकता है | प्रेम ही वह साधन है जिससे अज्ञान-तिमिर नष्ट होकर ज्ञान का प्रकाश फैलता है | प्रेम हि मानव को ईन्सान बनाता हैं | प्रेम हि मानव को संवेदनशील एवं समर्पणशील बनाता है |

वर्तमान समय में जीवन के हर स्तर पर भ्रम, विकृतियां एवं विसंगतियों ने मनुष्य को जखड रखा है | मनुष्य अत्यंत द्विधा ओर असमंजस्य की अवस्था में जी रहा है | भौतिक सुख साधन तो मानव ने विपुल मात्रा में अर्जित कर लिए | अर्थसंपन्नता से भी मनुष्य सज्ज है परंतु वह अशांत, अकेला, अजनबी और निराश है | आत्म शांति के लिए मानव बेचैन है परन्तु ऊसे संतुष्ठि की प्राप्ती नहि हो रही है | भौतिक साधनो को पाने की होड नें मनुष्य को विक्षिप्त एवं अंधा बना दिया है | बाजार के चकाचौंध ने मनुष्य को बौना बना दिया है | सच्चाई, अच्छाई, नितिमत्ता कौडीयों के दाम में बेची जा रही है | झुट,

Degloor College, Degloor
Dist.Nanded

फरेब, धोखा, वासना, अहिंसा से ग्रस्त व्यक्ती संवेदनशुन्य बनता जा रहा है | अनावश्यक ओर आडम्बर पुर्ण विचार एवं वस्तू की महत्ता बढ रही है | सबकुछ होकर भी वह आंतरिक रूप से डरा-सहमासा है | बेचेनी की अवस्था में जीवनयापन कर रहा है | अर्थकेंद्रित, वासनांध एवं मुल्यहिन मानसिकताने मनुष्य को चरित्रहिन एवं विश्वासहिन बना दिया है | युगीन परिप्रेक्ष्य में संत कबीर के वास्तववादी, मानवतावादी एवं समाज उपयोगी विचार अत्यंत प्रासंगिक है |

संदर्भ ग्रंथ :-

1) कबीर निराला और मुक्तिबोध - श्रीमती ललिता अरोडा
2) हिन्दी साहित्य - युग और प्रवृत्तियाँ - डॉ. शिवकुमार शर्मा
3) युग पुरूष कबीर - डॉ. रामलाल वर्मा, डॉ. रामचंद्र वर्मा
4) कबीर वचनावली - अयोध्यासिंह उपाध्याय - हरिऔध
5) कबीर की प्रासंगिकता - सं. सुनील जोगी
6) संत कबीर और तुकाराम के काव्य में प्रासंगिकता - डॉ. ज्ञानेश्वर गाडे

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded